नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

गांधी की हत्या का भ्रम पर परिचर्चा का आयोजन

वर्धा, 31 जनवरी 2019 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा में30 जनवरी को गांधी की पुण्यतिथि पर 'गांधी की हत्या का भ्रम' विषय पर परिचर्चा रखी गई। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. देवराज, अधिष्ठाता अनुवाद एवं निर्वाचन विद्यापीठ ने अपनी बात रखी और अध्यक्षता प्रो. मनोज कुमार, मानविकी एवं समाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा की गयी। सहायक प्राध्यापक संदीप सपकाले और डॉ. मुकेश कुमार ने भी अपनी बात रखी। इस मौके पर महात्मा गांधी फ्युजी-गुरूजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के सहायक प्राध्यापक डॉ. शिव सिंह

बघेल, डॉ. पल्लवी शुक्ला, डॉ. उमेश कुमार सिंह, गजानन निलामे, शिवाजी जोगदंड, केंद्र के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिव सिंह बघेल ने किया।

सहायक प्राध्यापक संदीप सपकाले ने अपने व्यक्तव्य में बौद्ध धर्म और गांधी की अहिंसा को कैसेअंबेडकर ने अपने आंदोलन में शामिल किया? इसका जिक्र किया। गांधी के प्रतिरोध में अंबेडकर को और अंबेडकर के प्रतिरोध में गांधी को खड़ा करने की प्रवृत्ति का विरोध उन्होंने किया। मुख्यवक्तय देते हुए प्रो. देवराज ने कहा कि व्यक्ति को समूह में बदल देना, समूह को उद्देश्य में बदल देना, ये गांधी शैली है। समाज में आंदोलन खड़ा करने के लिए गांधी अक्सर इस शैली का प्रयोग करतेहैं। त्रिकोणीय दृष्टि से उन्होंने अपने भाषण में गांधी हत्या, फासीवाद का वैचारिक संदर्भ, गांधी और अंबेडकर के परिप्रेक्ष्य में अपनी बात कही। अंत में उन्होंने कहा कि किसी भी महापुरुष को भगवान बनाकर पूजना हमारे लिए ज्यादा आसान होता है, चाहे वो गांधी हो या अंबेडकर! क्योंकि तब हम उनकी मूर्तियों पर हार चढ़ाते हैं, जयकार के नारे लगाते हैं और उनके विचारों के अनुपालन से खुद को बचा लेते हैं।हमें इन महापुरुषों को पूजने के बजाय इनके विचारों को आत्मसात करने की जरूरत है। ताकि हम समाज में हो रहे गलत कार्यों का अहिंसात्मक ढंग से प्रतिरोध कर सके। प्रो. मनोज कुमार ने अपने अध्यक्षीय

उद्बोधन में कहा कि आज का दिन अहिंसा, समता और स्वलंबन के सहादत का दिन है। आज हम जिस अहिंसा के पुजारी को याद करने के लिए इक्कठा हुए है उस (गांधी) व्यक्ति की लगभग 6 से 7 बार हत्या करने की कोशिश हुई। लेकिन हत्या करने वाले किसी न किसी वजह

से असफल रहे। हमें गांधी, अंबेडकर और संविधान को पूजने के बजाय उनके विचारों एवं नियमों का पालन करना चाहिए।आज के परिदृश्य में बात करते हुए उन्होंने कहा कि आज हम भटक गए हैं। हमारे अंदर न तो प्रतिरोध करने की हिम्मत रह गई हैं और न हम किसी को प्रतिरोध करने की अनुमति ही देते हैं। हमारी यही प्रवृत्ति आज हमें एक-दूसरों की नजर में राष्ट्रवादी से राष्ट्रद्रोही बना देती है। वास्तव में यह बहुत ही भयभीत करने का विषय है। कार्यक्रम में आए हुए लोगों का आभार डॉ. उमेश कुमार सिंह ने दिया।